RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

जनवरी-2026 | वर्ष - 17 | अंक : 12 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

आत्म-सम्मान के लिए स्वयं के साधन

पहले बामसेफ द्वारा और अब डी-एस4 द्वारा हम भारत के दलित-शोषित लोगों के आत्म-सम्मान के आन्दोलन को बनाने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ वर्षों में हमने यह भी सीखा है कि दलित-शोषित समाज का आत्मसम्मान का आन्दोलन बिना स्वयं के साधनों के नहीं चल सकता।

पिछले समय में हमने आत्मसम्मान के आन्दोलन को बनाने में प्रयुक्त स्वयं के साधनों की वृद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के कदम उठायें हैं। इनका हमें बहुत अधिक लाभ भी हुआ है और आज हम इस स्तर पर पहुँचे हैं। यह उन उपायों का ही परिणाम है।

हमारे इन पिछले प्रयत्नों पर विभिन्न लोगों की विभिन्न प्रतिक्रियाएं हुयी हैं। उदाहरण के रूप में हम अपने राष्ट्रीय अधिवेशनों आदि में प्रतिनिधियों के खाने की कीमत रखते हैं और इस प्रकार कीमत चुकाने वाली रसोई से हम विशेष रूप से आमंत्रित अतिथियों, विद्यार्थियों युवकों व समाज के अन्य तबको के आमंत्रित लोगों को मुफ्त खाना उपलब्ध कराते रहे हैं। यह अतिरिक्त व्यवस्था हमारे खाने को थोड़ा सा मंहगा बना देता है।

खाने को थोड़ा सा मंहगा करके भी हमें उन अधिवेशनों में घाटा उठाना पड़ा है। घाटे को पूरा करने के लिए हमारे प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भोजन को थोड़ा सा और महंगा करने के सुझाव दिये हैं। हम उस दिशा में सोच रहे थे। लेकिन अभी हाल ही में मुझे पटियाला (पंजाब) के एक साथी के कई पत्र प्राप्त हुये जिसमें राष्ट्रीय अधिवेशन में मुफ्त खाना उपलब्ध कराने के लिए लिखा है।

इस दिशा में सोचने वाले पटियाला के हमारे साथी पंजाब से अकेले नहीं। पंजाब के और भी बहुत से आदमी हैं जो कि बामसेफ के राष्ट्रीय अधिवेशन में या अन्य बड़े अवसरों पर मुफ्त में खाना खाने की इच्छा रखते हैं। उनमें से कुछ ने अपनी यह इच्छा मुझसे खुले रूप में व्यक्त की एवं अधिकतर ने अपने व्यक्तिगत वार्तालापों में यह इच्छा व्यक्त की। पंजाबी दलितों की उत्सवों पर मुफ्त खाने की यह इच्छा बिना किसी आधार के नहीं है। इसका आधार पंजाबी-दलितों की मानसिक दासता है। पंजाबी-दलित अपने मालिकों से (जो कि पंजाब की शोषक जातियाँ हैं) हमेशा ही मुफ्त खाना और गोलियां खाने की आदत से पीड़ित हैं। पंजाबी-दलितों की इस तरह की मानसिक दासता वास्तव में उनकी अयोग्यता है एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। क्योंकि पंजाबी दलित सारे देश के अपने भाईयों की तुलना में काफी अच्छी हालत में हैं। मैं सच्चे हृदय से आशा करता हूँ कि पंजाब के हमारे कार्यकर्ता अपने भाईयों की दासता की आदतों को बदलने की कोशिश करेंगे और उन अच्छी हालत के पंजाबी-दलितों को सामाजिक उद्देश्य के लिए अधिक देने के लिए प्रेरित करेंगे। दूसरी तरफ हमारे लोगों की अच्छी आदतें भी हैं। जब दिल्ली के चुनावों की घोषणा हुयी तो मैं होशियारपुर में कैडर कैम्प तथा जनसंसद को संचालित कर रहा था। कार्यक्रमों में भाग लेने वाले उत्साही लोगों ने चुनाव लड़ने के लिए कहा तथा कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए धन की तुरन्त व्यवस्था की। उन्होंने मेरे वजन के बराबर सिक्कों का प्रबन्ध किया जो कि 11700 रुपयों के बराबर थे। चुनावों के काम को प्रारम्भ करने में इस धन ने बड़ी मदद की।

चुनाव के दौरान विभिन्न स्थानों पर लोगों ने मुझे नोटों की मालायें पहनायीं। इससे भी हमारी कुछ हद तक तो सहायता हुयी। विभिन्न स्थानों से इस तरह के प्रोत्साहित करने वाले बहुत से अनुभव हुए। लेकिन शायद सबसे अधिक प्रोत्साहन बढ़ाने वाली व नैतिक साहस बढ़ाने वाली सहायता लखनऊ के कुछ बच्चों की तरफ से आयी थी। उन्होंने अपनी सारी बचत, जो कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयोग के लिए इकट्ठी की थी, हमारे चुनावों के प्रयत्नों के लिए दान दे दी। हमारे कार्यों को स्वयं के साधनों से पूरा करने के लिए इस तरह की अच्छी आदतों को प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

आत्मसम्मान के आन्दोलन को बनाने के लिए हर तरह के अपने ही साधन अत्यन्त आवश्यक है।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4, अंक 6, 16 मई, 1983)

साभार :
मा. कांशीराम साहब के ऐतिहासिक भाषण खण्ड-2 पेज संख्या 178 से 179 तक
ए. आर. अकेला

एकाकारता का सिद्धान्त *(Theory of Uniformity)*

सभी भौतिक शास्त्री पृथ्वी की दैनिक गति एवम् वार्षिक गति को स्वीकार करते हैं। पृथ्वी की गति पर अभी तक किसी ने प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया। परन्तु इस सम्बन्ध में पाठकों को एवं संसार के लोगों में को मैं बड़ी महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हूँ। कोपरनिक्स तथा गैलिलियो ने जब पृथ्वी की दैनिक गति तथा वार्षिक गति के सिद्धान्त को पुनर्जीवित किया, तब उन्हें यह पता नहीं था कि पृथ्वी के ऊपर हवाई जहाज तथा अन्तरिक्ष यान उड़ने लगेंगे। उन्होंने लालटेन के सामने ग्लोब को घुमाकर पृथ्वी की देनिक गति तथा उससे दिन–रात के होने की प्रतीति करा दी। अभी हाल में वैज्ञानिकों ने घोषणा की है कि पृथ्वी अत्यन्त तीव्र गति से अन्तरिक्ष में भागी जा रही है। अब यह भी पता चल गया कि सूर्य एक जगह स्थिर नहीं है। वह अपनी धुरी पर 25 दिन में एक परिक्रमा करता है।

वर्तमान मान्यता के अनुसार पृथ्वी अपनी धुरी पर 1000 मील प्रति घंटा की चाल से परिक्रमा कर रही है। अब प्रश्न यह है कि दो हवाई जहाह प्रत्येक 800 मील प्रति घंटा की चाल से दिल्ली से एक साथ क्रमशः लन्दन और टोकियों के लिए उड़ते हैं। अब यदि पृथ्वी पश्चिम से पूरब को चल रही है तो टोकियो जाने वाला जहाज कभी भी टोकियो नहीं पकड़ सकेगा और लन्दन जाने वाला जहाज अपनी नियत रपतार से चलने पर समय से पहले ही लन्दन पहुँच जायेगा। पर ऐसा नहीं होता। वे अपनी गति के अनुसार पूरब पश्चिम में समान दूरी पर समान समय से पहुँचते हैं।

मैंने कितने ही वैज्ञानिकों से पूछा कि जब पृथ्वी चल रही है तो यह विरोधाभास क्यों है? कुछ वैज्ञानिकों ने उत्तर दिया कि पृथ्वी का वातावरण पृथ्वी के साथ घूम रहा है। इस कारण हवाई जहाज पूरब पश्चिम समान दूरी पर समान समय में पहुँचते है। इस प्रकार विरोधाभास समाप्त हो जाता है। मैंने कहा पृथ्वी का वातावरण पृथ्वी की गति के साथ एक समय में एक ओर घूमता है, दोनों ओर नहीं। यह विरोधाभास है।

किसी वैज्ञानिक ने कहा कि आकर्षण शक्ति के कारण यह विरोधाभास समाप्त हो जाता है। मैंने कहा आकर्षण शक्ति का इसमें क्या दखल? यहाँ पर पृथ्वी की गति तथा हवाई जहाज की गति की तुलना हो रही है। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति हवाई जहाजों को पृथ्वी से चिपका देती। पर ऐसा नहीं होता है। हाँ, रेल व मोटर के साथ पृथ्वी की आकर्षण शक्ति काम कर रही है। हवाई जहाज आकर्षण शक्ति की कमजोरी का फायदा उठाकर उसकी अवहेलना कर पृथ्वी से ऊपर उठ जाते हैं। अतः यह विरोधाभास तो है ही। इस प्रकार किसी ने आज तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया।

हम और हमारे पूर्वज हजारों सालों से सप्त ऋषि तारों को उत्तर में देखते रहे और सूर्य, चांद तथा शुक्र ग्रह को पूर्व में उदय होते हुये देखते आ रहे हैं। तब तो पृथ्वी स्थिर है? यह प्रश्न बड़ा गम्भीर है। इस तर्क से अनुसार पृथ्वी की स्थिरता स्पष्ट है।

क्या वास्तव में पृथ्वी स्थिर है और सीमित है? मेरा उत्तर यह है कि पृथ्वी अचल नहीं। पृथ्वी चलायमान है। फिर हवाई जहाजों के अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने में विरोधाभास क्यों है? यह एक बहुत ही संवेदनशील प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये ही पुस्तक की प्रस्तावना का कलेवर बढ़ता जा रहा है।

स्थान परिक्रमण प्रभाव
Space Revolution Effect

ब्रह्माण्ड की गति महान है। ब्रह्माण्ड में हजारों आकाश गंगा अपनी 2 गति से घूम रही है। आकाश गंगाओं से सौर–परिवार तथा सौर परिवार में ग्रह, उपग्रह तथा नक्षत्र घूस रहे हैं। ग्रहों, उपग्रहों तथा नक्षत्रों में अणु–परमाणु घूम रहे हैं। इस प्रकार संसार की समस्त गतियाँ ब्रह्माण्ड की महान गति का अंश है।

आकाश पिंडों के बीच की दूरी को अन्तरिक्ष (Space) कहते हैं। आकाशी पिंड अपारदर्शक तथा अवरोधात्मक अणु–परमाणुओं का स्थान है जबकि अंतरिक्ष पारदर्शक एवम् अवरोधहीन अणु परमाणुओं का स्थान है। जहां स्थान है, वहाँ दूरी है और जहाँ दूरी है, वहाँ समय है। अतएव स्थान व समय एक साथ है। स्थान व समय को पृथक करके नहीं देखा जा सकता। स्थान के साथ समय का आभास अवश्यम्भावी है। हम स्थान व दूरी को देखते हैं। समय को हम अनुभव करते हैं। स्थान व समय एकाकर क्षेत्र में है।

पृथ्वी की गति हमारी आकाश गंगा एवम् सौर परिवार की गति का अंश है। पृथ्वी आकाश गंगा के एकाकार क्षेत्र (Field of Uniformity) में है। एकाकार क्षेत्र के कारण स्थान परिक्रमण प्रभाव (Space Revolution Effect) होता है। स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण, पूरब, पश्चिम उड़ान भरने पर हवाई जहाजों की गति में समानता यानी एक रूपता (Uniformity) आ जाती है। यहां पर एकाकार क्षेत्र का सिद्धान्त लागू होता है। इस धारणा से पूर्वोक्त विरोधाभासी संकट की समाप्ति हो जाती है। वास्तविकता यह है कि ब्रह्माण्ड में कोई वस्तु तथा कोई अणु–परमाणु स्थिर नहीं है। परन्तु ब्रह्माण्ड का समस्त पदार्थ गतिशील है। यह एक तथ्य है।

जब पृथ्वी गतिशील है तो उसके ऊपर के पदार्थ एवम् अणु–परमाणु भी गतिशील हैं। फिर स्थैर्य पिंड एवम् गतिमान पिंड की पृथकता का क्या मतलब है? जड़युक्त वेग एवम् जड़हीन वेग का अन्तर कैसा? पदार्थ एवम् गति की पृथकता आधारहीन है। जब यह बात सही है तो पदार्थ का ऊर्जा में परिवर्तन और ऊर्जा का पदार्थ में परिवर्तन (Interchange ability of Matter and Energy) की मान्यता निर्मूल है। आइन्स्टीन की यह मान्यता आधारहीन है।

किसी वस्तु के गतिमान हुये बिना किसी भी गति की कल्पना नहीं की जा सकती। रेल, मोटर तथा हवाई जहाज की गति को ही लीजिये। जब तक यें वस्तुयें चलेंगी नहीं, तब तक इनकी कोई गति नहीं। गति गति या वेग वेग चिल्लाने का कोई अर्थ नहीं। अब पाठक विद्युत की गति पर विचार करें – जब तक विद्युत करण इलेक्ट्रान का कोई उचित माध्यम नहीं होगा, तब तक विद्युत धारा गतिमान नहीं होगी।

अणु की रचना तथा अणु विखण्डन की विवेचना में हमने काफी से ज्यादा सैद्धान्तिक व्यायाम किया। अब जरा उसके क्रियात्मक पहल पर विचार करें। मैंने कितने ही न्यूकलियर भौतिक शास्त्रियों से पूछा कि क्या केवल एक अणु या परमाणु (क्यूआर्क और फर्मियांस) को अलग (isolate) करके विस्फोट किया जा सकता है? उन्होंने कहा, ''नहीं, अकेले अणु या परमाणु का विस्फोट नहीं किया जा सकता। पर हाँ अणु तथा परमाणु के फोटो लिये जा चुके हैं।'' क्या शून्य में कोई रोडियो एक्टीविटी हो सकती है तो फिर यूरेनियम तथा थोरियम ईधन की क्या आवश्यकता? अतः शून्य में कोई रोडियो एक्टीविटी नहीं हो सकती। फिर गामा किरण की गति फोटान अर्थात् शून्य में कैसे परिवर्तित हो सकती है? यूरेनियम तथा थोरियम पदार्थ को शुद्ध करके रेडियम पदार्थ निकाला जाता है, जो अणु बम निर्माण में प्रयोग किया जाता है। अणु बम विस्फोट में फोटान का निष्कर्षण होता है। फोटान ताप का वाहक होता है। फोटान की अग्नि पत्थर तथा बालू रेत तक को पिघाल देती है। इस प्रकार फोटान जड़हीन नहीं वरन् पदार्थ युक्त है एवम् फोटान का पदार्थ (ज्वलनशील ताप) गतियुक्त है। अणुबम विस्फोट में अणुओं की राख (fall-out) बन जाती है। अतः अणु विखंडन में अणु का क्षय नहीं होता। क्रियात्मक रूप से परखने पर आइन्स्टीन का यह कथन बिल्कुल गलत है कि अणु अथवा पदार्थ का क्षय हो जाता है। जब क्रियात्मक रूप में आइन्स्टीन का कथन गलत है तो सैद्धान्तिक रूप से भी गलत होगा। यह अकाट्य तथ्य है कि पदार्थ का कभी क्षय नहीं होता। अणु की राख में कुछ शक्ति रहती है। पदार्थ की ऊर्जा अथवा गति कभी समाप्त नहीं होती उसके रूप एवम् क्षमता में परिवर्तन होता है। पदार्थ व उसकी गति अविनाशी है।

अब हम मस्तिष्क के पदार्थ तथा विचार के वेग पर अपनी ध्यान केन्द्रित करते हैं। क्या मस्तिष्क के बिना कोई विचार उत्पन्न हो सकता है? नहीं। मस्तिष्क पदार्थ की संरचना है। यदि मस्तिष्क का पदार्थ नहीं हो तो कोई विचार उत्पन्न नहीं होगा। विचारोत्पादकता पदार्थ की गतिशीलता का घातक है। अतएव पदार्थ एवम् गति अभिन्न है। पदार्थ व गति एकाकार हैं। इनका एक ही क्षेत्र है।

अब हम प्रकाश तथा उसके वेग का विवेचन करेंगे। प्रकाश का मतलब सूर्य के प्रकाश से है। प्रकाश के सम्बन्ध में अभी तक हम न्यूटन की कारपल्स थ्योरी, किश्चियन हाईगींस तथा थॉमस यंग की वेव थ्योरी एवम् मैक्स प्लांक की क्वांटम थ्योरी को ही जानते हैं। क्वांटम थ्योरी के क्वांटा को अकसर फोटान कहते हैं। फोटान जड़हीन होते हैं। आइन्स्टीन कहते हैं कि प्रकाश के वेग पर कोई वस्तु चल नहीं सकती। प्रकाश के वेग पर चलने पर वस्तु अनस्तित्व हो जायेगी। इसका तात्पर्य यह है कि प्रकाश शून्य में चलता है।

अभी तक हमें यही ज्ञात है कि सूर्य का धरातल पदार्थ की चौथी अवस्था में है जिसे प्लाज्मा कहते हैं। सूर्य के बारे में कहा जाता था कि सूर्य आग का एक बड़ा गोला है। कुछ लोग कहते थे कि सूर्य शाश्वत प्रकाश का एक बड़ा बल्ब है। जे० सी० मैक्सवेल के सिद्धान्त के अनुसार सूर्य का प्रकाश एक प्रकार का विद्युत चुम्बकीय विकिरण है जिसकी गति एक लाख छयासी हजार मील प्रति सेकंड है। अन्य भौतिक शास्त्रियों के अनुसार सूर्य के धरातल पर 66 प्रकार के तत्व उसी अनुपात में हैं जिसमें कि वे पृथ्वी पर है, सिवाय हाइड्रोजन गैस तथा हिलियम गैस के जो कि सूर्य में असाधारण रूप से बहुतायत पायी जाती हैं। सूर्य में संयोजन प्रक्रिया (Fusion Process) होती है। सूर्य के भयानक ताप से हाइड्रोजन अणु संयोजित हो जाते हैं और हिलियम में परिवर्तित हो जाते हैं और सूर्य एक महान अणु भट्टी में बदल जाता है। अन्ततोगत्वा इस प्रक्रिया में बड़ी भारी मात्रा में ऊर्जा प्रकाश के रूप में उत्सर्जित होती है।

प्रकाश विकिरण चाहे विद्युत चुम्बक के माध्यम से माने या अणु संयोजन प्रक्रिया के द्वारा, पर वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार प्रकाश के वेग पर वस्तु अर्थात पदार्थ अनस्तित्व हो जाता है। सूर्य के प्रकाश में गति है, पदार्थ नहीं। सूर्य के प्रकाश में ग्यारह प्रकार की दृश्य अदृश्य किरणों पायी जाती है जो इस प्रकार हैं : लम्बी विद्युत तरंग, लम्बी रेडियो तरंग, स्टैन्डर्ड रेडियो प्रसार बैंड, लघु रेडियो, तरंग, टेलिविजन तथा रडार बैंड्स इन्फ्रारेड (ताप) किरण, दर्शनीय किरण, अल्ट्रावायलेट किरण, एक्स किरण, गामा किरण तथा कोस्मिक किरण।

अभी तक हमने प्रकाश के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक विवेचना की। अब हम सूर्य प्रकाश के क्रियात्मक पहलू पर विचार करेंगे। प्रकाश में केवल गति ही है? क्या सूर्य की किरणों में केवल गति ही है? प्रकाश में अथवा सूर्य की किरणों में कोई वस्तु नहीं अर्थात् कोई पदार्थ नहीं हैं? हम इन प्रश्नों पर विचार करेंगे। जब सूर्य निकलता है तो उसका प्रकाश आता है। सूर्य के प्रकाश में ताप की अनुभूति है। सूर्यास्त के पश्चात् प्रकाश नहीं आता, तब हम ऋण ताप अनुभव करते हैं। सूर्य के प्रकाश में बाल्टी का पानी गर्म हो जाता है और मध्याह्न में पानी उबलने लगता है। तारकोल पिघलने लगता है। सूर्य प्रकाश के ताप से जंगलों की घास जल जाती है ओर कभी–2 उसमें आग लग जाती है। पानी गर्म कैसे हो गया? तारकोल कैसे पिघल गया? घास कैसे जल गई? वह क्या वस्तु है जो सूर्य के प्रकाश की गति में आ गई? वह वस्तु कैसे आ गई? उसका माध्यम क्या है? वह वस्तु ज्वलनशीलता है जो प्रकाश की गति के माध्यम से आती है। ज्वलनशीलता मापी जा सकती है। ज्वलनशीलता ज्वलनशील किरणों में ही पायी जाती है। सर्वाधिक ज्वलनशील पदार्थ उदजन किरणें हैं। सूर्य से ज्वलनशील पदार्थ प्रकाश की गति के माध्यम से आ रहा है। सूर्य अपने प्रकाश के माध्यम से ज्वलनशील पदार्थ की वर्षा कर रहा है। अतएव यह अत्यन्त स्पष्ट है कि पदार्थ प्रकाश के वेग पर चल रहा है।

सूर्य प्रकाश के माध्यम से पृथ्वी पर ज्वलनशील पदार्थ की वर्षा होती है। इस पदार्थ से पृथ्वी पर वनस्पति की

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

उत्पत्ति होती है। उपभोग में वनस्पति खाक बन जाती है। खाक से पृथ्वी का कलेवर बढ़ रहा है। परिक्रमा में वस्तु का भार बढ़ जाता है जबकि लम्बे सफर में लम्बाई के अनुपात में वस्तु की तीव्रता में कमी आ जाती है। यानी तीव्रता घट जाती है। आइन्स्टीन का यह कथन भी गलत है कि गतिमान वस्तु की संहति (जड़ता) उस अनुपात बढ़ जाती है जिस अनुपात से उसकी लम्बाई घट जाती है।

सूर्य प्रकाश के कारण जब पृथ्वी का कलेवर बढ़ रहा है तो पृथ्वी की सीमितता का विचार गलत है। पृथ्वी का कलेवर बढ़ने से उत्पादन के साधन बढ़ जाते हैं। अतः अर्थ शास्त्री माल्थस की यह बात गलत है कि उत्पादन संख्यात्मक प्रगति से बढ़ता है जबकि जनसंख्या में ज्यामितिक प्रगति से वृद्धि होती है। वास्तव में शक्ति के साधन अनन्त हैं, उनका उपयोग करने के लिए जनसंख्या कम है। अतएव जनसंख्या नियमन का विचार प्रगति के लिए घातक है। जनसंख्या नियमन से मानव जाति के साथ बड़ा भारी अन्याय हो रहा है। हमें इस अन्याय को रोकना चाहिये। हमें इस ओर कदम बढ़ाना चाहिये।

हम यह चर्चा कर रहे थे कि प्रकाश के वेग पर पदार्थ चल रहा है। यह बात एक दम गलत है कि प्रकाश के वेग पर पदार्थ चल नहीं सकता और वह समाप्त हो जाता है। पदार्थ कभी समाप्त नहीं होता। वेग अथवा गति के शून्य में परिगमन की बात एक दम अर्थहीन है। पदार्थ शून्य में उत्पन्न नहीं होता और न शून्य के कारण चलता है। पदार्थ से अलग गति की धारणा अर्थहीन है। पदार्थ में स्वाभाविक गति है। गति एवम् ऊर्जा पदार्थ से पृथक नहीं हो सकती। पदार्थ व गति एकाकार है। गति पदार्थ की प्रकृति है। पदार्थ चराचर काय है।

पदार्थ गतिमय है। पदार्थ के अणु परमाणु भी गतिशील है। भौतिक पदार्थ में स्थैर्य (Inertia) गुण नहीं होता। अतएव पदार्थ में स्थैर्य की मान्यता निर्मूल है। इस कारण पदार्थ के स्थैर्य गुण पर आधारित महात्मा बुद्ध से लेकर गैलिलियो, देकार्ते से लेकर मार्क्स, आइन्स्टीन तथा अब्दुलसलाम–वेनबर्ग तक के सभी सिद्धान्त त्रुटि पूर्ण है एवम् आधारहीन है। आज तक हम जिस भौतिक वस्तु अर्थात पर ही भौतिक पदार्थ तथा सजीव प्राणी में भेद किया जाता था। यह बात सत्य प्रतीत होती है जबकि तथ्य यह है कि पदार्थ में भी गति है। गतिशीलता जीवन की निशानी समझी जाती थी/है और प्रगतिशीलता अर्थात् स्थिरता जड़ता अर्थात् भौतिकता का चिन्ह समझा जाता था। अब पदार्थ में गति सिद्ध हो गई तो पदार्थ के परमाणुओं तथा मानव कणों में समानता प्रमाणित हो जाती है। कहने का मतलब यह है कि गतिशीलता के कारण पदार्थ जीवनमय है। वास्तव पदार्थ कण मानव कण है। इसी कारण एकाकर का सिद्धान्त राजनीति शास्त्र में मानववाद कहलायेगा।

पदार्थ गतिमय है। पदार्थ के अणु परमाणु भी गतिमय है। गतिशीलता जीवन की निशानी है। अतः जीवन केवल पेड़–पौधों, कीट–पतंगो, पशु–पक्षियों तथा मनुष्यों में ही नहीं होता, वरन् जिस पदार्थ को हम आज तक निर्जीव समझते रहे, उसमें भी जीव है। पदार्थ व उसके अणु–परमाणु, जीवधारियों व उनके जीवाणुओं को जीवधारियों व उसके जीवाणुओं के समान सुख दुःख की अनुभूति होती है। मानव–ऋण तथा पदार्थ–कण में कोई अन्तर नहीं है। दोनों एक परिवार के सदस्य हैं।

मानव–कण का गुण गति पदार्थ पदार्थ–कण में है। जिस प्रकार मानव–कण 'गति' और वस्तु पिंड का यौगिक है उसी प्रकार पदार्थ वस्तु पिंड तथा गति का यौगिक है। पदार्थ पिंड व गति का योग है। पिंड व गति एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। दोनों अभिन्न हैं। अतएव जीवन योगात्मक ऐकिकवाद है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की धारणा गलत है, त्रुटिपूर्ण है। मार्क्स का समाजवाद का सिद्धान्त आधारहीन है। जिस प्रकार ब्रह्मवाद में वस्तु का कोई स्थान नहीं और इस सिद्धान्त के अनुसार मानव आत्मिक शक्ति है, उसी प्रकार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद या पदार्थवाद (यथार्थवाद) के अनुसार आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है और मानव भौतिक शक्ति है। ये दोनों धारणायें त्रुटि पूर्ण है। तथ्य यह है कि जीवन योगात्मक ऐकिकवाद है और मानवीय शक्ति है। इस सिद्धान्त के अनुसार पृथकता एवम् असमानता होने के संदेह की भी कोई गुंजाइश नहीं है। जीवन संघर्षमय नहीं वरन् शान्तिमय एवम् प्रेममय है। बनावटी विषमता एवम् असमानता को शिक्षण के द्वारा मानवीय प्रयत्यों से मिटाना होगा, तभी शांति स्थापित हो सकेगी।

अब इस बात में शक की तनिक भी गुंजाइश नहीं है कि पदार्थ अपनी गति से स्वतः चलायमान है। अतः यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि संसार को समस्त वस्तुयें आइन्स्टीन के कथन के विरुद्ध किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा गतिशील नहीं वरन् अपने स्वचालन गुण के अनुसार गतिशील है। वस्तु गति से निरपेक्ष नहीं है और न सापेक्ष। वरन् इनका एकाकार क्षेत्र है। संसार की समस्त वस्तुयें महानतम वस्तु ब्रह्माण्ड का अंश है। ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुयें एकाकार क्षेत्र (Field of Uniformity) के कारण गतिशील है।

पदार्थ व गति का एकाकार क्षेत्र होने के कारण पदार्थ व गति की पृथकता का सिद्धान्त गलत है। जब क्षेत्र एकाकार है तो क्षेत्र एक करने की बात अथवा एकीकृत क्षेत्र का सिद्धान्त गलत है। अतएव महात्मा बुद्ध, सुकरात तथा प्लेटो से लेकर गैलिलियो से अब्दुल सलाम वेनबर्ग तक पृथकता, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, सापेक्षवाद एवम् एकीकृत क्षेत्र में सभी सिद्धान्त त्रुटिपूर्ण है।

साभार :
शिक्षा के अहिंसक क्रांति
पेज संख्या XXX से XLII तक
मूलचन्द्र विद्यार्थी

मस्तिष्क और तनाव

मस्तिष्क हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। मस्तिष्क को कुछ भी क्षति पहुँचने पर हमारे विचार, भावनाएँ, तर्क करने और बाहरी दुनिया के साथ संवाद करने की क्षमता पर खतरा पैदा हो जाता है। न्यूरोडीजनरेटिव बीमारियों को रोकने की कोशिश मात्र नहीं है, बल्कि हमारी सबसे पहली प्राथमिकता तो हमारी सोचने, तर्क करने की क्षमता की सुरक्षा करना है।

सोचने के बारे में सोचना भी अब एक परिकल्पना है। जब आप अपने मैमोरी बैंक में पहुँचते हैं और बचपन के किसी अनुभव या परिवार के साथ बिताए विशेष पल को याद करते हैं तो क्या कभी आपको अचंभा होता है कि आप छोटी से छोटी बात को भी कैसे याद रख पाते हैं। कुछ देर के लिए पढ़ना बंद करें और खिड़की से बाहर देखें। अपनी आँखों की शानदार, रंगीन और वृहद दृष्टि पर आश्चर्य होता है? यह सब ईश्वर की अनोखी रचना यानी मस्तिष्क से संभव होता है।

मस्तिष्क हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इसकी पूर्ण सक्रियता के बगैर हमारा सिर्फ अस्तित्व बचा रहता है और हम दुनिया के साथ खुद को
जोड़ नहीं पाते हैं। मेरी माँ की मृत्यु ब्रेन ट्यूमर से हुई थी। इस बीमारी की वजह से ही मौत से पहले उनकी बोलने की क्षमता प्रभावित हुई थी। वह मेरे जीवन का सबसे निराशाजनक समय था, क्योंकि वे हमारे द्वारा कही गई बातों को समझ नहीं पाती थीं। जब हम उनसे कहते कि हम सभी उनसे बहुत प्यार करते हैं, तो वे जवाब में सिर्फटकटकी लगाए देखती रहती थी। उनके शब्द आपस में उलझकर रह जाते थे और उनका कोई मतलब नहीं बनता था। यह कहने की जरूरत नहीं है कि मस्तिष्क की रक्षा करना निश्चित रूप से मेरी पहली प्राथमिकता है।

यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि अब हमारा मस्तिष्क (केंद्रीय तंत्रिका तंत्र) और स्नायु परिसरीय तंत्रिका तंत्र भी ऑक्सीडेटिव तनाव से नहीं बच पाते हैं। यह सामान्य शत्रु कई प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न कर मस्तिष्क और स्नायुओं को क्षति पहुँचाता है। इससे होने वाली बीमारियों को न्यूरोडीजनरेटिव बीमारियाँ कहते हैं। इनमें से कुछ हैं, अल्जाइमर्स डिमेशिया, पार्किंसंस बीमारी, एएलएस, मल्टीपल, स्क्लेरोसिस तथा ऑक्सीडेटिव तनाव के प्रति संवेदनशील होने के कई कारण है अपने आकार के अनुरूप मस्तिष्क को बहुत अधिक मात्रा में ऑक्सीडेटिव काम करना पड़ते हैं, जिसके कारण बहुत अधिक संख्या में स्वतंत्र तत्वों का निर्माण होता है।

स्नायुओं में संचलन को बनाए रखने के लिए अनेक रसायनों द्वारा की जाने वाली सामान्य गतिविधियों के कारण भी अधिक स्वतंत्र तत्वों का निर्माण होता है। मस्तिष्क और स्नायु के ऊतक में अपेक्षाकृत कम मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स उपस्थित रहते हैं। केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का निर्माण ऐसी लाखों कोशिकाओं द्वारा होता है, जिनका जीवन सिर्फ एक बार का होता है। इसका मतलब यह है कि एक बार क्षतिग्रस्त हो जाने पर वे जीवनभर के लिए बेकार हो जाती है। मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। किसी विशिष्ट क्षेत्र में छोटी सी चोट भी गंभीर समस्या खड़ी कर सकती है।

चीनी की जगह, गुड़ का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

आजकल देखा जा रहा है चीनी हर घर में प्रयोग की जाती है जिसको खाने के भिन्न तरीके हैं। यह गन्ने से ही बनती है लेकिन इसके तैयार करने में कितने कैमीकल से तैयार की जाती है। कितना रासायनिक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है।

बनाने वाले ही जाने इतना जो जरूर है चीनी को चमकाने में कितना और क्या–क्या लगता होगा, कितनी पोषकता है यह भी बनाने वालों को ही मालूम है, लेकिन इतना जरूर है।

गुड़ काला होने के बावजूद पोषक तत्वों से भरपूर होता है। आयरन की मात्रा भरपूर होती है तथा पाचन शक्ति को मजबूत करता है तथा जीवन दायिनी हवा को प्रदान करता है।
भी बल प्रदान करता है।

जबकि चीनी पचाने के लिए रिप्रेस्टिव सिस्टम को भी मेहनत करनी पड़ती है ऐसा जानकारों का मानना है।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर के आजाद
सेवानिवृत्त सहायक मण्डल प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय बीमा सेवा विभाग, कानपुर

गैर-ब्राह्मणों ने गोमांस खाना क्यों छोड़ा ?

हिदुओं के विभिन्न वर्गों के खान-पान की आदत और प्रकृति और रीति उसी प्रकार स्थित और जड़ीभूत हो गई है जैसे उनके अन्य रीति-रिवाज। जिस प्रकार हम रीति-रिवाजों के आधार पर हिंदुओं को वर्गीकृत कर सकते हैं उसी प्रकार उनके खान-पान की आदतों के आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। जिस प्रकार साम्प्रदायिक दृष्टि से हिंदू या तो शूद्र होते हैं या वैष्णव, उसी प्रकार मांसाहारी होते हैं या शाकाहारी।

साधारणतः मांसाहारी और शाकाहारी का यह वर्गीकरण पर्याप्त हो सकता है। लेकिन यह मानना होगा कि यह पूर्ण वर्गीकरण नही है। व्यापक वर्गीकरण के लिए हमें मांसाहारी वर्ग को दो हिस्सों में बांटना होगा।

(1) जो मांस तो खाते हैं किंतु गोमांस नहीं खाते। (2) जो गोमांस भी खाते हैं। दूसरे शब्दों में खान-पान को लेकर हिंदू समाज के तीन हिस्से होंगे। (1) ''जो शाकाहारी हैं,' (2) '' जो मांसाहारी हैं'' किंतु गोमांस नहीं खाते । (3) जो गोमांस भी खा लेते हैं। इसी वर्गीकरण के अनुरूप हिन्दू समाज के तीन वर्ग या वर्ण हैं। (1) ब्राह्मण, (2) अब्राह्मण और (3) अछूत । यद्यापि यह वर्गीकरण हिन्दू समाज के चातुर्वर्ण्य के अनुरूप नहीं है फिर भी यह विद्यमान तथ्यों के अनुरूप तो है ही। ब्राह्मणों में ही एक वर्ग है जो शाकाहारी है और अब्राह्मणों में वह वर्ग है जो मांस खाता है किंतु गोमांस नहीं खाता तथा अछूतों में गोमांस भी खाने वाला वर्ग है।

यह त्रिविध वर्गीकरण पर्याप्त है और वस्तु स्थिति के अनुसार है। कोई भी यदि इस वर्गीकरण पर ध्यान से विचार करे तो अब्राह्मणो की स्थिति उसका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करेगी ही। शाकाहारी दोनों समय में आता है। मांसाहारी होना तो समझ में आता है, लेकिन यह बात समझ में आनी कठिन है कि एक मांसाहारी केवल एक प्रकार के मांस अर्थात गोमांस के खाने में क्यों आपत्ति करें ? यह एक गुत्थी है जिसे सुलझाने की आवश्यकता है। अब्राह्मणों ने गोमांस खाना क्यों छोड़ दिया। इसे जानने के लिए इस विधान का अध्ययन आवश्यक है। तत्संबंधी विधान या तो अशोक के निर्देशों में होगा या मनु के विधान में।

हम अशोक से ही आरंभ करते हैं। अशोक के वे शिलालेख जिनका इस विषय से संबंध है तीन है। शिलालेख संख्या-1, स्तंभलेख संख्या-2 और 5, शिलालेख संख्या-1 इस प्रकार हैं :-

'' यह धर्म लेख देव प्रिय प्रियदर्शी राज ने लिखवाया है। यहां इस राज्य में राजधानी में किसी जीव को मार कर होम न किया जाए और आनन्दोत्सव न मनाया जाए, क्योंकि देवानाम प्रियादर्शी राजा में बहुत दोष देखते हैं। तथापि एक प्रकार के ऐसे उत्सव हैं जिन्हें देवानाम प्रियदर्शी राजा पसंद करते हैं। पहले राजा की पाकशाला में प्रतिदिन कई शत सहस्त्र जीव सूप (शोरबा) बनाने के लिए मारे जाते थे, पर अब से जबकि यह धर्म लेख लिखा जा रहा है केवल तीन ही जीव मारे जाते हैं (अर्थात) दो मोर और एक मृग। पर मृग का मारा जाना नियम नहीं। ये तीनों प्राणी भी भविष्य में नहीं मारे जायेंगें ''।

स्तंभ लेख संख्या-2 इस प्रकार है :-

'' देवानाम प्रिय प्रियदर्शी राजा ऐसा कहते हैं - धर्म (करना) अच्छा है। पर धर्म क्या है ? चित्त क्लेश की न्यूनता, बहुत से शुभ कार्य, दया, सत्य और शौच (पवित्रता) का पालन करना। ज्ञान-दान भी मैनें बहुत प्रकार से दिया। दो पायों, चौपायों, तथा जलचरों के प्रति मैंने बहुत अनुग्रह किया। यह लेख मैंने प्राण दान दिया तथा और भी अनेक प्रकार के उपकार किए। यह लेख मैंने इसलिए लिखवाया कि लोग इसके अनुसार आचरण करें और यिह चिरस्थायी रहे। जो इसके अनुसार चलेगा वह सुकृत करेगा। ''

स्तंभ लेख संख्या- 5 इस प्रकार हैं :-

'' देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी राजा कहते हैं :- राज्यभिषेक के 26 वर्ष बाद मैंने इन प्राणियों का वध करना बंद करा दिया है, यथा सुग्गा, मैना, अरूण, चकोर, हंस, नान्दीमुख, गोलाट, जतुका (चमगादड़) कछुआ, साही, गिलहरी, बारासिंगा, वृषभ, बंदर ओकपिंड, मृग, श्वेल फाख्ता और सब तरह के वे चौपाए जो न तो किसी प्रकार उपभोग में आते हैं और न खाए जाते हैं। बकरी, भेड़ और सुअरों, गायों तथा इनके बच्चों को जो छह महीने तक के हों, मारा जाए। मुर्गों को बधिया न किया जाए। जीवित प्राणियों के साथ भूसी को न जलाया जाए। अनर्थ करने के लिए या प्राणियों की हिंसा करने के लिए वन में आग न लगाई जाए। एक जीव को मार कर दूसरे जीव को न खिलाया जाए। प्रति चार चार महीने की तीन ऋतुओं को तीन पूर्णमासी के दिन, पौष मांस की पूर्णमासी के दिन, चतुदर्शी अमावस्या और प्रतिपदा के दिन तथा प्रत्येक उपवास के दिन मछली न मारी जाए और न ही बेची जाए। इन सब दिनों में हाथियों के वन में तथा तालाबों में कोई भी दूसरे प्रकार के प्राणी न मारें जाएं। प्रत्येक पक्ष की अष्टमी, चतुदर्शी, अमावस्या या पूणिया तथा पुष्ट और पुनर्वसु नक्षत्र में और प्रत्येक चार महीने के त्यौहारों के दिन बैल बधिया न किया जाए तथा बकरा, भेड़ा, सुअर, और इसी तरह के दूसरे प्राणियों को बधिया नही किया जाए। पुण्य और पुनर्वसु नक्षत्र के दिन प्रत्येक चातुर्मास्य की पूर्णिमा के दिन और प्रत्येक चातुर्मास्य के शुक्ल पक्ष में घोड़े और बैल को न दागा जाए। राज्यभिषेक के बाद 26 वर्ष के अंदर मैंने 25 बार कारागार से लोगों को मुक्त किया है। ऐसा था अशोक का विधान ।

अब हम मनु पर विचार करेंगे। उसके कानूनों में मांसाहार के संबंध में निम्नलिखित व्यवस्था है :-

5.11. कच्चा मांस खाने वाले गिद्ध आदि और गांव में रहने वाले कुकूर, कबूतर आदि पक्षी का मांस न खाए। जिसके नाम का निर्देश न किया गया हो ऐसे सुमधारी घोड़े, गधे आदि भी अभक्ष्य हैं। टिटिहरी पक्षी का मांस भी वर्जित है।

5.12. गौरेया, पारिया, पपीहा, हंस, चकवा, ग्राम कुक्कुट (मुर्गा) वल्लक, बत्तख, रज्जुवल जलकाक, सुग्गा और मैना-इन पक्षियों का मांस न खाए।

5.13. कठफोड़ों और जिनके बगल झिल्ली से जुड़े हों वे जल मुर्गा, नख से विर्दीण कर खाने वाले बाज आदि और पानी में डूबकर मछली खाने वाला पक्षी, वधस्थान का मांस खाना वर्जित है।

5.14. बगुला, बलाका, द्रोणकाक, खंजन, मछली खाने वाले जल जीव (मगर आदि) ग्राम्य शूकर और सब प्रकार की मछलियां न खाएं।

5.15. जो जिसका मांस खाता है वह उसका मांस खाने वाला कहलाता है। मछली सबका मांस खाती है, जो मछली खाता है वह सब मांसों का खाने वाला है। इसलिए मछली न खाएं।

5.16. पाटीन (कुआरा) और रोहित (रोहू) मछली हव्य कव्य के लिए विहित है। राजीव, सिंहतुण्ड और शल्क वाली सब मछलियां खाद्य है।

5.17. अकेले विचरने वाले और रहने वाले सर्पादि जीवों को भक्ष्यों में कहे गए वे पशु-पक्षी जो परिचित न हों उन्हें और पंचनख वाले वानरादि प्राणियों को न खाएं।

5.18. पंचनखियों में सेह, साही, शल्यक, गोह, गेंडा, कछुआ और खरहा तथा एक ओर दांत वाले पशुओं में ऊंट को छोड़ कर बकरे आदि पशु भक्ष्य हैं ऐसा कहा गया है।

पशुओं की हत्या के बारे में अशोक और मनु के जो विधान हैं वे यहां आ गए हैं। लेकिन हमारा विषय मुख्य रूप से गो-हत्या है। अशोक के निर्देशों का विवेचन करने पर प्रश्न उठता है कि क्या गो-हत्या निषिद् ठहराई गई थी ? इस बारे में मतभेद प्रतीत होता है। श्री विसेंट स्मिथ का विचार है कि अशोक ने गोवध का निषेध नहीं किया था। अशोक के निर्देशों पर टिप्पणी करते हुए प्रोफेसर स्मिथ कहते हैं :-

'' यह बात ध्यान देने की है कि अशोक के निर्देशों में गो-हत्या का निषेध नहीं है। जो ऐसा करता है कि गो-हत्या वैध रही थी। ''

प्रोफेसर राधाकुमुद मुकर्जी, प्रोफेसर स्मिथ से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि अशोक ने गो-हत्या अवश्य बंद कर दी थी। प्रो. मुकर्जी का आधार शिलालेख 5 का हत्या वर्जन वह उद्धरण है जो सभी चौपायों पर लागू था। उनका तर्क है कि यह विचार कि गो की हत्या की छूट मिल गई थी। स्तम्भ लेख में जो कुछ कहा गया है उसका यह ठीक अर्थ नहीं है। शिलालेख में जो कथन है वह विशेषता लिए हुए है। वह सभी चौपायों पर लागू नहीं होता है। यह केवल उन चौपायों पर लागू होता है जो न तो किसी प्रकार उपयोग में आते हैं न खाए जाते हैं। गो को हम ऐसा चौपाया नहीं कह सकते जो किसी प्रकार काम में आता हो और न खाया ही जाता हो। ऐसा लगता हे कि प्रोफेसर स्मिथ का यह कथन ठीक है कि अशोक ने गो वध बंद नहीं किया था। प्रो. मुकर्जी यह कह कर जान छुड़ाना चाहते हैं कि अशोक के समय गो मांस नहीं खाया जाता था इसलिए उसकी निषेधात्मक आज्ञा गो पर भी लागू होती है। उनका कथन एकदम अनर्गल है। क्योंकि गो ऐसा पशु है जिसे सभी वर्ग के लोग खाते ही थे।

प्रो. मुकर्जी की तरह अशोक के शिलालेख के साथ खींचा तानी करके यह अर्थ निकालने की कोई आवश्यकता नहीं कि उसने गो-हत्या कानून से बंद कर दी थी मानों ऐसे करना उसका विशेष कर्तव्य था। अशोक का गो से किसी तरह का कोई खास सरोकार नहीं था और न इसे वह अपना कोई खास कर्तव्य ही समझाता था कि गो को हत्या से बचाएं। अशोक प्राणी मात्र पर, चाहे वह मनुष्य हो पशु हो, दया चाहता था।

वह मानता था कि जहां-जहां अनावश्यक रूप से पशु हत्या होती है उसे बंद कर दिया जाए। यही कारण है कि उसने यज्ञों के लिए पशु बलि का निषेध किया, जो उसने आवश्यक समझा। उसने उन पशुओं के वध को निषिद्ध ठहराया जो किसी उपयोग में नहीं आते अथवा जो खाए नहीं जाते। ऐसा पशुओं का निरर्थक वध वास्तव में अनुचित है। अशोक ने विशेष रूप से गो वध क विरूद्ध कोई कानून नहीं बनाया। यदि हम बौद्ध दृष्टिकोण समझ लें तो इस बात को लेकर अशोक पर दोषारोपण नहीं किया जा सकता।

अब हम मनु को लेते हैं। उसने भी गो हत्या के विरूद्ध कोई कानून नहीं बनाया। उन्होंने तो विशेष अवसरों पर भी मांसहार अनिवार्य ठहराया ह।

तब फिर अब्राह्मण ने गो मांसाहार क्यों छोड़ दिया? उनके इस त्याग का कोई सुस्पष्ट और सहज कारण मुझे सूझता है वह यह है कि अब्राह्मण ने ब्राह्मण की नकल करने के प्रयत्न में गोमांस खाना छोड़ा यह एक नया विचार हो सकता किंतु यह कोई असंभव बात नहीं। श्री गैब्रायल टार्दे नाम के फ्रांसीसी लेखक ने संस्कृति के बारे में लिखा है कि वह किसी निम्न स्तर के वर्ग विशेष में अपने से ऊंचे स्तर के वर्ग की संस्कृति का अनुसरण करने से फैलती है। यह नकल करना इतने धीरे-धीरे होता है और यह मशीन की तरह अपना काम इस तरह करता है जैसे कोई भी प्राकृतिक नियम। गैब्रायल टार्दे ने नकल करने के नियमों की चर्चा की। उसमें से एक यह है कि नीचे के वर्ग के लोग सदैव ऊपर के वर्ग के लोगो की नकल करते हैं। यह एक ऐसी सामान्य जानकारी की बात है कि शायद ही कोई आदमी इसके यथार्थ को अस्वीकार करे।

अब्राह्मणों में जो गो-पूजा का भाव उदय हुआ और उन्होंने जो गोमांस खाना छोड़ा, इसमें तनिक संदेह नहीं कि वह अपने ऊंचे दर्जे के ब्राह्मणों की नकल करने की प्रकृति का ही परिणाम है। वह भी सत्य है कि ब्राह्मणों द्वारा गो-पूजा के पक्ष में बहुत प्रचार कार्य किया गया है। गायत्री पुराण एक उदाहरण है। लेकिन मूलतः यह नकल करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति का ही परिणाम है। हां अब इससे एक दूसरा प्रश्न उठता है- ब्राह्मणों ने गोमांस खाना क्यों छोड़ा ?

जिन लोगो की जन-आंदोलनों में रूचि है, उन्हें.... केवल धार्मिक दृष्टिकोण अपनाना छोड़ देना चाहिए। उन्हें भारत के लोगों के प्रति सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण भी अपनाना होगा।

-भीमराव अम्बेडकर
साभार-बाबा साहेब डा. अम्बेडकर
संपूर्ण वाड़मय, खण्ड 14

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कन्हैया

लेखा प्रभारी
अपर श्रमायुक्त कार्यालय, कानपुर क्षेत्र, कानपुर
मो.: 9506359801

प०स० NCSC-K/Accounts-S/Office Order/2024-25/

Government of India/भारत सरकार

Ministry of Labour & Employment/श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,

Directorate General of Employment/रोजगार महानिदेशालय

National Career Service Centre for SC/STs/नेशनल केरियर सर्विस सेन्टर फॉर एस0सी0/एस0टी0

NCSC for DA Building, B-Wing, 1st Floor/एन0सी0एस0सी0 फॉर डी0ए0 बिल्डिंग, बी–विंग, प्रथम तल

NSTI Campus, Udyog Nagar, Kanpur, UP-208022/एन0एस0टी0आई0 परिसर, उद्योग नगर, कानपुर, उ0प्र0–208002

E-mail : ncscscstknp@gmail.com • Mob. No.: 7988193472

निःशुल्क कोर्स अनुसुचित जाति/जन जाति हेतु

The detail of Courses/Training Programmes with eligibilty criteria is as under :-

S. No.	Name of the courses	Duration of the courses	Age Limit	Minimum Qualification	Maximum Family Income	Books & Stationery & Stipend Rs. 1000/- Per month	Likely to be Commenced
1	Special Coaching Scheme (Slenography)	01 Year	18-27 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
2	'O' Level Computer Software training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
3	'O' Level Computer hardware training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
4	Office Automation Accounting and Publishing Assistant through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
5	Computer Application and Business Accounting Asscoiate through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
6	Cyber Secured web Development Associated through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July

Desirous SC/STs jobseekers may visit www.ncs gov.in or www doe gov.in and submit their application to the National Career Service for SC/STs where the candidate is interested for participating in the above said program. Candidates would be considered for only one course. The candidates may indicate their choice of courses in order of their preferences

(राज कुमार)
उप–क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी
राष्ट्रीय आजीविका सेवा केन्द्र, कानपुर
Mob. No. 7988193472

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आनन्द मोहन

सेवानिवृत्त संयुक्त आयुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राम लखन पटेल

सहायक श्रमायुक्त, कानपुर क्षेत्र
कानपुर नगर
मो.: 7017510499

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रो. (डा.) राम प्यारे

सदस्य उ. प्र. लोक सेवा आयोग, प्रयागराज, उ. प्र.
मो.: 9140967616

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राम अवतार चौधरी

अधिशाषी अभियंता
जलकल विभाग, वाराणसी, उ. प्र.
मो.: 9450272500

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

इं. रवि सागर

अधिशासी अभियन्ता
नलकूल खण्ड प्रथम
कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्रीकांत सिंह रंगीला

अधिशासी अभियन्ता
केस्को कानपुर
मो० : 9411887808

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अर्चना कैथवार

प्रशासनिक अधिकारी (उपाध्यक्ष)
लेबर डिपार्टमेन्ट मिनिस्टीरियल एम्प्लाइज एसोसिएशन उ0प्र0
कल्चर मिनिस्टर उ.प्र. राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद

समस्त सम्मानित क्रमिको एवं नगरवासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मेवालाल

सेवानिवृत प्रधान सहायक
अध्यक्ष मिनिस्ट्रयल एसो. लोक निर्माण विभाग, कानपुर क्षेत्र
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

प्रशासनिक अधिकारी
मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953
अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो० : 9696222033

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रतिमा रानी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मनीष कुमार

प्रोपराइटर
चकेरी गैस सर्विस
222, सदानन्द नगर, अहिरवाँ
मो० 9455857007

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

डिपो मनैजर/नाजीर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द कुमार

कनिष्ठ लिपिक
मो.: 9621999187
जोन–1 नगर निगम कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर
मो.: 9651013399

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी
उपाध्यक्ष रा0क0स0 परिषद, कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9305218844

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मधु

जीवन एवं स्वास्थ बीमा अभिकर्ता
131, गोमती नगर मकड़ीखेड़ा, कानपुर
मो.: 9838239138

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामचरन

पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो० : 9984251800

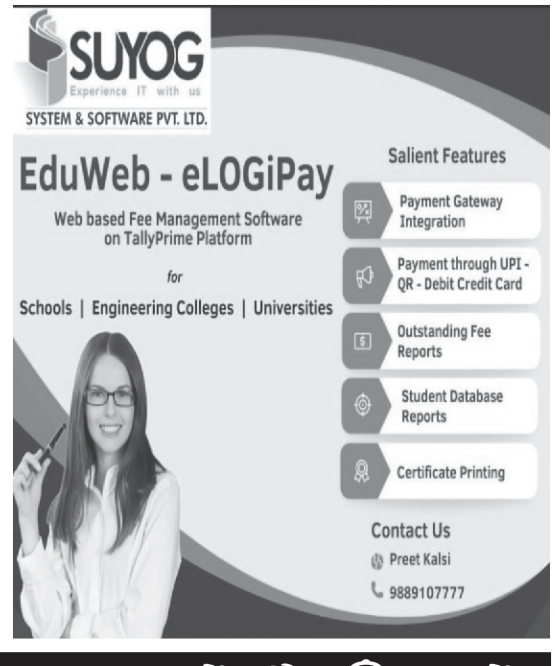

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर, उ0प्र0
मो० : 7905305856

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भूप सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9455646040

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरविन्द कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.
शाखा डी.ए.वी. कालजे, कानपुर
मो.: 9956976995

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सी. के. गौतम

डिप्टी कमिश्नर राज्यकर विभाग
बहराइच

गणतंत्र दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ ....

रामनरेश | धर्मेन्द्र सोनकर

महासचिव (आई.टी. सेवा) अध्यक्ष
इनकम टैक्स एस.सी./एस.टी. एम्पलाइस वेलफेयर एसोसिएशन, कानपुर
मो. 7599101755

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कुसुम

सहायक आयुक्त निबन्धक
कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुहैब अनवर अन्सारी

वरिष्ठ प्रबन्धक उत्पादन
उ. प्र. राज्य हथकरघा निगम लि.
जी.टी. रोड, कानपुर उ.प्र.

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

यूनाइटेड ज्यूरिस एसोसिएट्स

संयुक्त कानून सहकर्मी रोजगार के लिए
आवेदन आमंत्रित किए जा रहे है।
वार्षिक आय रू. 1 से 10 लाख तक।
Email : unitedjurisassociates@gmail.com
Mob.: 9819435431

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

छविलाल वर्मा

प्रधानाचार्य
श्रीविद्यानन्द जूनियर हाईस्कूल
जरौली, चरखारी, महोबा, उ.प्र.

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बी. के. दीपंकर

डिप्टी कमिश्नर
राज्य कर विभाग, मऊ

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर. सी. जाटव

सेवानिवृत बैंक आफ इण्डिया
कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुनीता बौद्ध

अध्यक्ष
समाज कल्याण सेवा समिति

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विपिन सोनकर

क्लर्क
अपर श्रमायुक्त, कानपुर क्षेत्र
कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रभात गौतम

पी. ए.
श्रम विभाग कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

ई. विनोद कुमार

सहायक अभियन्ता चतुर्थ
मो.: 8840572378

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रवि प्रताप दोहरे

वर्क एजेण्ट
निर्माण खण्ड (भवन), लोक निर्माण विभाग
कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आशाराम त्यागी

जिला महासचिव, बी.एस.पी.

किरन त्यागी

बी.एस.पी., कार्यकर्ता
मो.: 9005874795

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गीता कुमारी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0
जी.टी. रोड, कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रवि प्रताप दोहरे

वर्क एजेण्ट
निर्माण खण्ड (भवन)
लोक निर्माण विभाग, कानपुर नगर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अशोक कुमार

वरिष्ठ सहायक
सी.एस.ए., कानपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जनता प्रापर्टी

प्रो0 पूरन भाटिया
मो.: 9044420848
शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रंजीतपाल

प्रापर्टी डीलर
मो.: 6394748458
आजाद नगर, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बृजबाला ट्रे्‌ ' स

प्रो0 देवेन्द्र आवस्थी
मो.: 9935664484
शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

शहनाई गेस्ट हाउस

प्रो0 मनोज रावत
मो.: 9839166551
धोबी पुलिया के पास, राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

देशराज

कोटेदार
मो.: 9838967018
देवारा, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्याम बहादुर यादव

प्रापर्टी डीलर
मो.: 6394267196
आजाद नगर बाजार, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नैन्सी ज्वैलर्स

प्रो. मुकेश सिंह
मो.: 8175007779
आजाद नगर बाजार, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रकाश ट्रे र्स ब्रंड डेवलपर्स

प्रो0 जीतू साहू
मो.: 9889883718
शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कृष्ण स्वीट हाउस

प्रो. लव सिंह राजपूत
मो.: 9838497777
राजधानी मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....
प्रखर टेन्ट हाउस
प्रो0 अनूप साहू, मो.: 9919275582
स्टेज, जयमाला, मण्डप एवं बिजली का सामान किराये पर मिलता है।
पशु चिकित्सालय वाली गली, शुक्लागंज, उन्नाव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....
विजय कुमार रावत
कोटेदार
कटहा दलनरायनपुर आजाद मार्ग, शुक्लागंज, उन्नाव

सेवा में,
नाम .....
पता .....
.....
.....

जल अमूल्य निधि है

जल ही जीवन है

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1–	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1–	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2–	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2–	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3–	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3–	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4–	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर फोन कर अवगत करायें।	4–	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5–	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827/26 पर इसकी जानकारी दें।	5–	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6–	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6–	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल–संरक्षण

1– बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250–300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।

2– जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।

3– प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगातें हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।

4– ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके/बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।

5– सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

सचिव
ईश्वर सिंह

महाप्रबन्धक
आनन्द कुमार त्रिपाठी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।